गुजरात : विरोध के दिल-चस्प प्रयोग

—आलोक मेहता—

निकाला। एक अन्य अवसर पर मक्खियोंकी संख्याके बराबर चूहोंको पकड़ा और यह कहकर जनताके सामने छोड़ा गया कि सब अनाज इन्होंने खा लिया है। बच्चोंने विरोध प्रदर्शनमें छात्रों और महिलाओंको भी पीछे छोड़ दिया। कानून और व्यवस्था की स्थिति सम्भालनेके लिए जब कर्नल आनन्दके नेतृत्वमें सेना २७ जनवरीकी सुबह अहमदाबादमें प्रवेश करने जा रही थी तब दो हजार बच्चों का फौजने उनकी अगवानी की। इन बच्चोंका नेतृत्व करीब पचास छोटी छोटी लड़कियां हाथोंमें लाल गुलाब के फूल लिये हुए कर रही थीं। और तीन सेनाके जवानोंकी बन्दूकें हाथमें ही रखी रहीं और उन्होंने बच्चोंको उठाकर गले लगा लिया।

वातावरण कुछ ऐसा बना कि किसी के भड़काये बगैर बच्चोंने अपनेसे दूर रहनेवाले माता पिताको लिख भेजा कि चिमनभाई पटेलके न हटनेतक वे स्कूल नहीं जायेंगे। जो बच्चे अभिभावकोंकी नाराजी पर स्कूल गये भी तो स्लेटपर पाठ और गिनती लिखने के बजाय मोटे मोटे अक्षरों में पटेल हटाओ लिखकर अपने सामने रखा और बैठ गये। उन्हें न तो मार पीट से धमकाया जा सका और न टाफी देकर फुसलाया जा सका। आन्दोलनके दौरान जब कर्फ्यू में ढील दी जाती तो लाखों स्त्री पुरुष और बच्चे अपने अपने घरोंका छतोंपर चढ़कर थाली डिब्बा व चिमटा बजाने लगते। इसे मुख्य मन्त्री की मौतकी अर्थी कहा जाता था बुजुर्गोंका कहना है कि ऐसा दृश्य उन्होंने कभी नहीं देखा।

अनाज की मांग कर रहे गुजरातमें जब सेना पहुंची तो उसने . . .

खून जो अनाजके दानेसे बनता है। हमें विश्वास है कि वे यहाँ हमें खून देने आये हैं, लेने नहीं इससे कठोर हृदय वाले सैनिकों तक का दिल भी पसीज गया।

यही कारण था कि एक दिन कर्फ्यू में ढील का समय समाप्त होनेसे कुछ मिनट पूर्व जब कर्नल आनन्द एक गलीसे गुजरे, तब राशनकी दुकान के सामने लाईन में ६०-६५ व्यक्तियोंके बाद खड़े हुए एक बूढ़ेने रोते हुए कहा कि यदि आज राशन न मिला तो उसकी पत्नी और छोटे बच्चे शायद ही बचेंगे। कर्नल इस दुखको सह न सके और उन्होंने वायरलेससे सन्देश देकर कर्फ्यू में ढीलकी अवधि दो घण्टे और बढ़ा दी। ऐसी अनेक घटनाएं हुईं जिन्होंने सिद्ध कर दिया कि बढ़ती हुई कीमतें, खाद्यान्न का अभाव और भ्रष्ट सरकार का विरोध करनेके लिए शांति प्रिय जनता कमर कसकर कितना विकराल रूप धारण कर सकती है।

गुजरातमें पूरे एक मास चले इस आन्दोलनमें निस्सन्देह लाठी, गोली अश्रुगैस का प्रयोग भरपूर हुआ। यह भी सत्य है कि जनताके रोष ने आगजनी और लूटपाट का हिंसक रूप भी ग्रहण किया। इसके घाव अभी इतने ताजे हैं कि आन्दोलन समाप्त हुआ कहना कठिन हो रहा है। आन्दोलन में शहीद हुए ५६ व्यक्तियोंकी लाशें दुःख और रोषकी स्मृतियाँ ताजा बनाये हैं। बहुत समय तक इन्हें भुला पाना असम्भव होगा। आन्दोलनके राजनीतिक पहलू और सत्ताधारियोंके आपसी झगड़े भी चर्चाके विषय बने रहेंगे। परन्तु इन सब बातों के बीच इस आन्दोलनकी उग्रता और इसमें जनताका सम्पूर्ण सहयोग दर्शाने वाले जो मौलिक अभूतपूर्व और दिलचस्प तरीके प्रगट हुए हैं वे देशके विभिन्न आन्दोलनोंके इतिहासमें सुरक्षित रहेंगे। इतना समग्र जन आन्दोलन कमसे कम स्वातन्त्र्योत्तर कालमें तो अनोखा ही रहा। यह सत्य कभी भुलाया नहीं जायेगा।

—

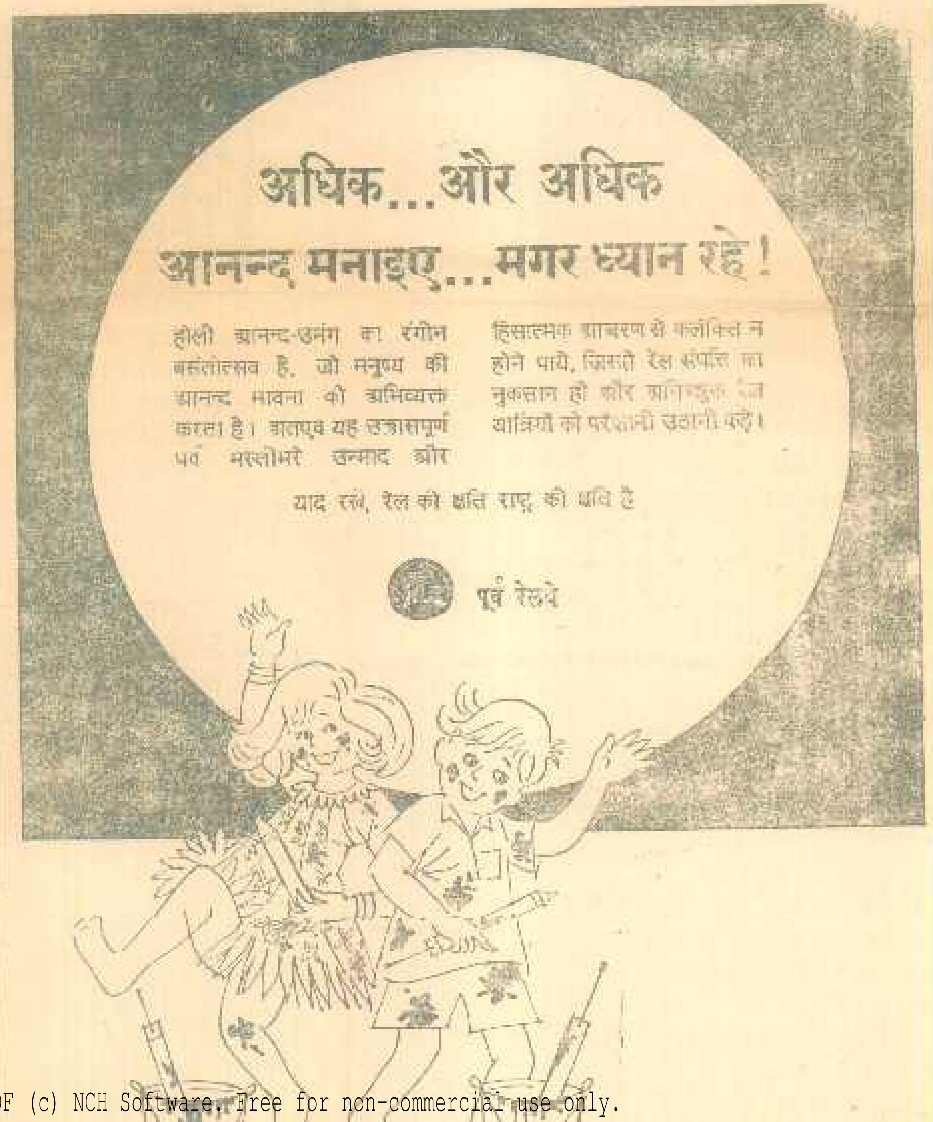

Printed by BoltPDF (c) NCH Software. Free for non-commercial use only.